

**पिंगला स्त्री.** (तत्.) 1. हठ योग में सुषुम्ना नाड़ी के बाईं ओर स्थित एक नाड़ी जिससे दक्षिण नासापुट का श्वास चलता है, इसमें सूर्य का वास माना गया है, सूर्य नाड़ी टि. इससे विपरीत दिशा में स्थित नाड़ी विशेष जिससे बाएँ नासापुट का श्वास चलता है चंद्रनाड़ी या इंगला कही जाती है। हठयोग में इन दोनों नाड़ियों का विशिष्ट महत्व है 2. लक्ष्मी 3. पीतल।

**पिंगलाक्ष पुं.** (तत्.) शिव, महादेव।

**पिंगाक्ष वि.** (तत्.) जिसके नेत्र कुछ लालिमा से युक्त भूरे रंग के हों पुं. (तत्.) 1. शिव, महादेव 2. मार्जार, बिलाव, बिड़ाल।

**पिंगाश पुं.** (तत्.) 1. एक प्रकार की मछली 2. गाँव का प्रधान या मुखिया 3. खरा या शुद्ध सोना।

**पिंगाशी स्त्री.** (तत्.) नील का पौधा।

**पिंगिमा स्त्री.** (तत्.) ऐसा भूरापन जिसमें कुछ लालिमा भी हो।

**पिंगी स्त्री.** (तत्.) 1. शमी का पेड़ 2. चुहिया।

**पिंगूरा पुं.** (देश.) छोटा पालना।

**पिंगेश पुं.** (तत्.) अग्नि का एक नाम।

**पिंज वि.** (तत्.) विकल, व्याकुल पुं. (तत्.) 1. बल, शक्ति 2. वध, हत्या 3. एक प्रकार का कपूर 4. चंद्रमा 5. समूह।

**पिंजड़ा पुं.** (तद्.) पिंजरा।

**पिंजन पुं.** (तत्.) 1. रुई धुनने की धुनकी 2. रुई धुनने की क्रिया या भाव।

**पिंजना स.क्रि.** (तत्.) धुनकी से रुई धुनना।

**पिंजर वि.** (तत्.) 1. लालिमा लिए हुए पीले रंग का 2. पीला 3. सुनहरा पुं. (तत्.) 1. पिंजरा 2. हड्डियों की ठठरी, पंजर 3. सोना 4. नागकेसर 5. लाल रंग का वह फोड़ा जिसमें कुछ भूरापन हो।

**पिंजरा पुं.** (तद्.) 1. धातु, बाँस आदि की तीलियों का बना हुआ बॉक्स की तरह का वह आधान जिसमें पक्षी, पशु आदि बंद करके रखे जाते हैं,

ला.अर्थ. ऐसा स्थान जहाँ से किसी का बाहर निकलना प्रायः असंभव या दुष्कर हो।

**पिंजरापोल पुं.** (देश.) 1. पशुशाला 2. गोशाला।

**पिंजरिक पुं.** (तत्.) पुराने ढंग का एक तरह का बाजा।

**पिंजरित वि.** (तत्.) पीले रंग का या पीले रंग में रंगा हुआ।

**पिंजल वि.** (तत्.) 1. दुःख, भय अथवा संकट आदि के कारण जिसका रंग पीला पड़ गया हो 2. दुःखी 3. व्याकुल 4. बहुत अधिक आतंकित; पुं. (तत्.) 1. कुशा 2. हरताल 3. जाल-बेंत।

**पिंजली स्त्री.** (तत्.) कुश घास की दो नुकीली पत्तियाँ जो एक ही जगह बंधी हुई हों, इनका उपयोग यज्ञ में होता है।

**पिंजा स्त्री.** (तत्.) 1. हलदी 2. रुई।

**पिंजारा पुं.** (तद्.) रुई धुनने वाला कारीगर, धुनिया।

**पिंजाल पुं.** (तत्.) सोना, स्वर्ण।

**पिंजिका स्त्री.** (तत्.) धुनी हुई रुई की पूनी जो सूत कातने के काम आती है।

**पिंजियारा पुं.** (तद्.) 1. रुई ओटने वाला 2. रुई धुनने वाला, धुनिया।

**पिंजूष पुं.** (तत्.) 1. कान की मैल 2. खूंट।

**पिंड वि.** (तत्.) 1. घन, ठोस 2. गुथा हुआ 3. घना, पुं. (तत्.) घनी या ठोस चीज का छोटा और प्रायः गोलाकार खंड या टुकड़ा, ढेला या लौंदा 2. कोई गोलाकार पदार्थ 3. भोजन का वह अंश जो प्रायः गोलाकार रूप में लाकर मुँह में डाला जाए, कौर, ग्रास 4. जौ के आटे अथवा भात आदि का वह गोलाकार खंड जो श्राद्ध में पितरों के निमित्त वेदी आदि पर रखा जाता है मुहा. पिंड देना- कर्मकांड की विधि के अनुसार किसी मृत व्यक्ति के उद्देश्य से उसका श्राद्ध करना 5. ढेर, राशि 6. खाद्य पदार्थ, आहार, भोजन 7. जीविका अथवा उसके निर्वाह का साधन 8. भिक्षु को दिया जाने वाला दान 9. गर्भ की प्रारंभिक अवस्था, भ्रूण 10. मनुष्य का